युवा प्रकोष्ठ

आज हम जिस दौर से गुजर रहे हैं, यह देश और युवाओं के लिए स्वर्णिम युग है। देश में इस समय लगभग 65 प्रतिशत आबादी युवा है, जो आने वाले समय में देश की दशा एवं दिशा के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। ऐसे महत्त्वपूर्ण एवं दुर्लभ क्षण में आवश्यकता है वर्तमान युवा पीढी को देश हित व समाज हित में सशक्त एवं समर्थ बनाने की। समर्थ एवं सशक्त बनाने की प्रक्रिया में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है सकारात्मक सोच द्वारा उनके आत्मबल, मनोबल को मजबूत बनाना व ऊँचा उठाना तथा उनकी उचित आजीविका प्राप्त करने में सहायता करना। प्रकोष्ठ द्वारा तैयार किए गए युवा, समाज के विभिन्न क्षेत्रों में युवाओं के बीच पहुँचकर उन्हें राष्ट्रीय व समाज कर्तव्य के प्रति भाव जागृत करेंगे । युवा प्रकोष्ठ के तीन सूत्र है-:

1. स्वस्थ युवा सशक्त समाज,

2. स्वावलम्बी युवा सम्पन्न समाज,

3. सेवा भावी युवा-सुखी समाज ।

इस दृष्टि से युवा प्रकोष्ठ के निम्न कार्य होंगे

1. समाज में युवाओं को संगठित करना ।

2. उनके लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करना ।

3. उनको स्वस्थ, स्वावलंबी एवं सेवाभावी बनाने में मदद करना ।

4. संबन्धित प्रकोष्ठ की सहायता से व्याख्यान, संगोष्ठी अभ्यास वर्ग प्रशिक्षण शिविर

आयोजित करना ।

5. जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफल समाज युवाओं को जोड़ना ।

संगठन :-

1. राष्ट्रीय संयोजक -राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत ।

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत युवा अध्यक्ष / संयोजक ।

3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों में से दो सदस्य ।

महिला प्रकोष्ठ

हमारे शास्त्रों में लिखा है-
'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।'
जहां नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं।
नास्ति वेदापरं शास्त्रं, नास्ति मातुः समो गुरुः।

वेद से बड़ा कोई शास्त्र नहीं है और माता के समान कोई गुरु नहीं। विश्व, राष्ट्र व समाज की आधी जनसंख्या नारी है। आधी जनसंख्या व बच्चे नारी के ही साथ है। यदि उनकी स्थिति दयनीय रही, तो समाज अपंग जैसी स्थिति में रह जाएगा। समाज को अपंगता की स्थिति से बचाने हेतु नारी जागरण आवश्यक है। नारी अपनी पुरातन गौरवशाली अतीत की जाने। अपनी शक्ति को पहचाने। अपनी क्षमता व दिव्यता को पहचानकर उसे पाने व बढ़ाने हेतु प्रयासरत हो एवं उसमें पुनः पतिष्ठित हो। यही महिला प्रकोष्ठ का उद्देश्य है।
वस्तुतः नारी देवत्व की मूर्तिमान प्रतिमा है वह दया करुणा, सेवा सहयोग, ममता, वात्सल्य, प्रेम और संवेदना की जीती जागती तस्वीर होती है। अपने परिवार व आसपास के परिवार में उसकी जीवनचर्या में अपनाए जाने वाले क्रम को देखकर सहज ही इस बात को अनुभव किया जा सकता है। पुरुष में साहस, पराक्रम, बल, शौर्य आदि गुण प्रधान होता है परन्तु नारी संवेदना प्रधान होती है। वह ईश्वर की अनुपम कृति है, रचना है जो संसार में प्रेम दिव्यता, संवेदना, ममता, करुणा का संचार करती है। वह मातृत्व व वात्सल्य की विलक्षण विभूति है जो ईश्वर का प्रतिनिधित्व करती है।
शास्त्रों में कहा है- दस उपाध्यायों से एक आचार्य श्रेष्ठ है, 100 आचार्यों से एक पिता श्रेष्ठ है, 1000 पिताओं से एक माता उत्तम है। नारी शक्ति है, सृजेता है, निर्मात्री है वह अपनी सन्तान, अपने पति व परिवार का निर्माण करती है जिससे समाज का निर्माण होता है। नारी संस्कार व संस्कृति की संवाहिका है- नारी के द्वारा ही संस्कृति जीवन्त रहती है उसी के द्वारा अगली पीढी संस्कारित होती है।
महिला प्रकोष्ठ के सूत्र :-
नारी जागरण के चार आधार है- शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन और संस्कार। नारी शिक्षित ही साथ ही संस्कारवान हो। स्वस्थ हो तथा स्वावलम्बी हो। इसके साथ वह दूसरों को भी शिक्षित, स्वस्थ और स्वावलम्बी बनाने हेतु सक्षम बनें।

महिला प्रकोष्ठ के कार्य

1. समाज में महिलाओं को संगठित करना ।

2. उनके लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करना ।

3. उनको शिक्षित, स्वस्थ, स्वावलंबी, संस्कारित एवं सेवाभावी बनाने में मदद करना ।

4. उनकी संस्कारित परिवार निर्माण हेतु भूमिका सुनिश्चित करना । परिवार के वातावरण को स्वर्ग के समान के समान बनाना बहुत हद तक परिवार की नारी के हाथ में होता है।

5. घर के बालक बालिकाओं को आदर्श बालक एवं आदर्श कन्या बनाने हेतु प्रयत्न करना । माता पिता घर में कन्या जब तक रहती है, अपने आवी जीवन की नींव का निर्माण करती है। यह नींव मजबूत हो गई तो वह आदर्श नारी में रूपान्तरित होकर समुन्नत परिवार, श्रेष्ठ व आदर्श समाज का सुदृढ सांचा बन जाती है।

6. श्रेष्ठ व संस्कारवान संतानोत्पति हेतु प्रमुख महिलाओं को हिन्दू संस्कारों का प्रशिक्षण देना व प्रेरित करना ।

7. संबन्धित प्रकोष्ठ की सहायता से व्याख्यान संगोष्ठी अभ्यास वर्ग प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना ।

8. जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफल समाज महिलाओं को चिन्हित करना एवं संगठन से जोड़ना ।

9. समाज में महिलाओं के समुचित विकास में बाधक कारकों का पता लगाना उनका समाधान खोजना और उसे जमीनी स्तर पर लागू करना। शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं के दशा और दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकती है।

10-अशिक्षित एवं अविकसित महिला, शिक्षित एवं विकसित समाज का निर्माण नहीं कर सकती हमे उन्हें हर हाल में इस दिशा में मजबूत बनाना ।

11-महिलाओं को सम्मान दिलाने की और उनकी मदद करने की भावना घर घर फैलाना ।

12-महिलाओं में छुपी हुई प्रतिभा को पहचानकर उसे समाज के सामने लाना और उसे आत्म निर्भर बनने में सहयोग करना होगा उन्हें हमारी पारम्परिक व्यवसाय छपाई और उससे जुड़े सभी कारात्मक क्षेत्री (फैशन डिज़ाइन, टाई एवं डाइ शिल्प, कढ़ाई एवं ऐप्लीक, हाथ ब्लॉक उपाई जयपुर सांगानेर बगरू बाड़मेर भीलवाड़ा चित्तौड और कोटा की रंगाई, छपाई में प्रशिक्षित करना, उनकी प्रतिभा अनुरुप उन्हें सम्मानजनक कार्य और साथ ही साथ बाजार भी उपलब्ध कराना एक आत्म निर्भर और आत्मविश्वास से पूर्ण महिला ही समाज के विकास में सहायक हो सकती है।

13. आधुनिक कंप्यूटराइज्ड युग के नए क्षेत्रों की भी जानकारी एवं उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था करना

14-महिला कोऑपरेटिव सोसायटी (श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड) बनाने की दिशा में कदम बढ़ाना।

15. राज्य राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के विकास की जो गोजनाएं चल रही है उनका लाभ हमारे समाज की महिलाओं तक पहुँच सके हमें वो भी कोशिश करनी होगी। संयुक्त राष्ट्र संघ के कई कार्यक्रमों का आयोजन हर साल किया जाता है। राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर भी कई कार्यक्रम होते है उन सभी योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ किस प्रकार हमारे समाज की महिलाओं को मिस सकता है इस विषय पर चर्चा और अति शीघ कार्य आरम्भ करने की आवश्यकता है।

संगठन :-

1. राष्ट्रीय संयोजिका राष्ट्रीय कार्यकारिणी दद्वारा मनोनीत

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी दद्वारा मनोनीत महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष/ संयोजक

3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं में से दो सदस्य ।

शिक्षा प्रकोष्ठ

हमारे शास्त्रों में शिक्षा/ विद्या के बारे में कहा गया है

तमसो मा ज्योतिर्गमय

अर्थात अन्धकार से मुझे प्रकाश की ओर ले जाओ।

न हि जानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र कुछ भी नहीं (अन्य)है।

ये वैदिक श्लोक भारतीय सस्कृति के मूल स्तम्भ है। प्रकाश में व्यक्ति को सब कुछ दिखाई देता है, अन्धकार में नहीं। ज्ञान से व्यक्ति का अन्धकार नष्ट होता है। उसका वर्तमान और भविष्य जीने योग्य बनता है। ज्ञान से उसकी सुप्त इन्द्रियाँ जागृत होती हैं। उसकी कार्य क्षमता बढ़ती है जो उसके जीवन को प्रगति पथ पर ले जाती है। अति प्राचीन काल से. भारत समाज के पूर्ण विकास के लिए शिक्षा के महत्व के पति जागरुक रहा है। वैदिक युग से गुरुकुल में पीढ़ी दर पीढी शिक्षा प्रदान की जा रही है। यह शिक्षक केवल वैदिक मंत्री का एकमात्र ज्ञान नहीं था बल्कि छात्रों को एक पूर्ण व्यक्ति बनाने के लिए आवश्यक व्यवसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता था। आधुनिक समय में शिक्षा सभी के लिए जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक है। यह आत्मविश्वास विकसित करती है और एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में मदद करती है। शिक्षा गर्भस्थ शिशु से मोक्ष प्राप्ति तक हो सकती है। आजकल प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च माध्यमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा सभी के जीवन में महान भूमिका निभाती है। हमारी शिक्षा यह निर्धारित करती है कि हम भविष्य में किस प्रकार के व्यक्ति बनेंगे। इस प्रतियोगी ससार में. सभी के लिए शिक्षा प्राप्त करना बहुत आवश्यक है। उचित शिक्षा भविष्य में आगे बढ़ने के लिए बहुत से रास्तों का निर्माण करती है। यह हमारे जान के स्तर, तकनीकी कौशल और नौकरी में उच्च पद को प्राप्त करने के द्वारा हमे सामाजिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से मजबूत बनाती है। प्रत्येक बच्चा अपने जीवन में कुछ अलग करने का सपना रखता है। उसके माता-पिता भी अपने बच्चे को बड़ा होकर डॉक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक अधिकारी, बहु राष्ट्रीय निगम में अधिकारी या अन्य उच्च पदो पर देखना चाहते हैं। सभी सपनों को सच करने का केवल एक ही रास्ता है. अच्छी शिक्षा। कुछ विद्यार्थी जो अन्य क्षेत्रों में दिलचस्पी रखते हैं जैसे खेल, स्पोर्ट्स, नृत्य, संगीत आदि को डिग्री, जान कौशल और आत्मविश्वास. प्राप्त करने के लिए अपनी शिक्षा के साथ जारी रखते हैं।

समाज का शिक्षा प्रकोष्ठ इस दृष्टि से समाज में निम्न कार्य करेगा ।

शिक्षा प्रकोष्ठ के कार्य :-

1. गर्भ से लेकर मृत्यु तक समाज में शिक्षा के प्रसार हेतु कार्य करना ।

2. समाज के विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने हेतु मार्गदर्शन करना ।

3. समाज के विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने में आ रही बाधाओं को दूर करने का प्रयत्न करना ।

4. विभिन्न प्रांतो में समाज के छात्रावास निर्माण करने हेतु समाज को प्रेरित करना ।

5. समाज के विदयार्थियों को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न शैक्षणिक योजनाओं की जानकारी प्रदान करना ।

6. समाज में शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्ध प्रतिभाओं को चिन्हित करना एवं संगठन से जोडना ।

7. समाज के विद्यार्थियों को लाभान्वित करने की दृष्टि से प्रत्येक प्रांत से शिक्षा निधि की स्थापना करना एवं राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा निधि में वृद्धि करना ।

8. समाज के विदयार्थियों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा से संबंधित कार्यक्रम आयोजित करना ।

9. संबन्धित प्रकोष्ठ की सहायता से व्याख्यान संगोष्ठी अभ्यास वर्ग प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना ।

10 गर्भस्य शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने की दृष्टि से कार्य करना ।

11. समाज बंधुओं दवारा शिक्षा के क्षेत्र में स्थापित संस्थानों को सूचीबद्ध करना।

संगठन :-

1. राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी दवारा मनोनीत

2. सदस्य प्रातीय कार्यकारिणी दवारा मनोनीत शिक्षा प्रकोष्ठ अध्यक्ष /संयोजक

3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों में से दो सदस्य ।

रोजगार एवं कौशल विकास प्रकोष्ठ

समाज के प्रत्येक व्यक्ति के पास किसी न किसी स्तर पर अपना जीवनयापन करने के लिये जीविकोपार्जन का साधन होना आवश्यक है। नौकरी तथा स्वरोजगार के क्षेत्र में आजीविका प्राप्त करने के अनगिनत अवसर है। आज स्वरोजगार, बेरोजगारी दूर करने का एक अति उत्तम विकल्प है जिससे देश की उन्नति भी होती है। स्वयं के लिये कार्य करना अपने आप में एक चुनौती तथा प्रसन्नता है।

नौकरी एवं स्वरोजगार में अंतर

नौकरी में व्यक्ति कर्मचारी होता है, जबकि स्वरोजगार में वह स्वयं नियोक्ता की तरह होता है।

नौकरी में आमदनी नियोक्ता पर निर्भर करती है कि वह कितना वेतन देता है, जबकि स्वरोजगार में उस व्यक्ति की योग्यता पर निर्भर करती है जो स्वरोजगार में लगा हुआ है। अपने कार्य के प्रति जितना समर्पित होगा उसकी आय उतनी ही अधिक होगी

नौकरी में व्यक्ति दूसरों के लाभ के लिए कार्य करता है जबकि स्वरोजगार में व्यक्ति अपने ही लाभ के लिए कार्य करता है।

नौकरी में कर्मचारी को कार्य विशेष नियोक्ता दवारा दिया जाता है. जबकि स्वरोजगार में वह अपनी आवश्यकतानुसार कार्य चुनता है।

स्वरोजगार में अपनी वस्तु की मांग के अनुसार आय घटती बढ़ती रहती है नौकरी में निश्चित वेतन अवश्य मिलता है जब तक कि एक कर्मचारी नौकरी करता में रहता है।

देश में शिक्षा के बढ़ते प्रसार से स्वरोजगार की तुलना में नौकरी को ज्यादा पसंद किए जाने लगा है। प्रत्येक उच्च शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी किसी न किसी प्रकार की नौकरी चाहता है। परंतु देश की सभी को नौकरी देने की सीमाए हैं। प्रत्येक विद्यार्थी नौकरी राज्य सरकार, केंद्र सरकार या बहुराष्ट्रीय कपनी की पसंद करता है। आज भी यह तीनों भारत में 5-6% से अधिक लोगों को नौकरी नहीं दे सकते। आज जो शिक्षा प्रदान की जाती है वह सैद्धांतिक अधिक व व्यवहारिक कम होती है। विद्यार्थी भी अपने अध्ययन के दौरान कौशल विकास का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं करता है कौशल विकास का स्वरोजगार से सीधा संबंध है। समाज के कुछ विद्यार्थियों को निश्चित रूप से निति निधर्धारण का क्रियान्वयन की दृष्टि से प्रशासनिक क्षेत्र में जाना चाहिए, तथा इस दृष्टि से उन्हें प्रयास भी करना चाहिए परंतु समाज की बेरोजगारी दूर करने की दृष्टि से नौकर बनने की बजाय मालिक बनने की मानसिकता विकसित करने में समाज का अधिक हित नजर आता है।
इसलिए बेरोजगारी समाप्त करने का श्रेष्ठ उपाय स्वरोजगार क्षेत्र में ही उपलब्ध है। समाज का रोजगार एवं कौशल विकास प्रकोष्ठ दोनों ही क्षेत्र में निम्न कार्य करेगा ।

1. समाज के विद्यार्थियों को राज्य सरकार, केंदीय सरकार एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों में उपलब्ध रोजगार अवसरों की जानकारी देना ।

2. राज्य सरकार, केंदीय सरकार एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों में उपलब्ध नौकरियों के हिसाब से तैयारी करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना।

3. अध्ययन के दौरान संबंधित पाठ्यक्रम से जुडे हुए कौशल विकास कार्यक्रमों की जानकारी देना ।

4. विभिन्न स्तरों पर सरकार दवारा संचालित कौशल विकास पाठ्यक्रमों की जानकारी देना ।

5. स्वरोजगार के क्षेत्र में लगे हुए विभिन्न समाज बंधुओं की जानकारी प्राप्त कर उन्हें समाज के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देने के लिए प्रेरित करना।

6. सरकार। समाज बंधुओ से अनुदान प्राप्त कर महिलाओ, आर्थिक दृष्टि से कमजोर बंधुओं की सहायतार्थ कौशल विकास कार्यक्रम संचालित करना ।

7. स्वरोजगार के क्षेत्र में लगे हुए समाज के बड़े व्यवसायियों की आवश्यकता के अनुसार विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करना तथा समाज के व्यवसावियों को उन्हें रोजगार देने हेतु प्रेरित करना ।

8. संबन्धित प्रकोष्ठ की सहायता से व्याख्यान संगोष्ठी अभ्यास वर्ग प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना ।

9. अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में नौकरी करने वाले व सेवानिवृत्त समाज बंधुओं को चिन्हित कर समाज के विद्यार्थियों को मार्गदर्शन करने हेतु सेवाएं प्राप्त करना ।

10. राष्ट्रीय स्तर पर समाज का एक रोजगार व कौशल विकास संस्थान निर्माण करने का प्रयास करना या किसी समाज बंधु को इस दृष्टि से प्रेरित करना

संगठन :-

1. राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी दवारा मनोनीत

2. सदस्य प्रातीय कार्यकारिणी दवारा मनोनीत शिक्षा प्रकोष्ठ अध्यक्ष /संयोजक

3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों में से दो सदस्य ।

रंगाई एवं छपाई प्रकोष्ठ

रंगाई-छपाई कला राजस्थान की प्रसिद्ध हस्तकलाओं में से एक है। यह हमारा पुश्तैनी कार्य रहा है परंतु समाज के अधिकाश लोग इस कार्य के स्थान पर अन्य व्यवसाय करने लगे हैं। अब छपाई कार्य सांगानेर बगरु जयपुर, जयरामपुरा, बडागांव, राहुवास छीपा का अकोला शाहपुरा जोधपुर, बाडमेर मथुरा उज्जैन, भोपाल मुबई एवं अहमदाबाद तक सीमित रह गया है। हमारे समाज के लोगों द्वारा छपाई व्यवसाय की उपेक्षा के कारण अन्य जाति के लोगों ने इस पर इस प्रकार अधिकार जमा लिया है जैसे यह उनका पैतृक व्यवसाय है। सांगानेर जो छपाई के लिए प्रमुख स्थान माना जाता था आज भी छपाई के लिए तो प्रमुख है परंतु हमारे समाज के लोगों का 15 प्रतिशत से अधिक हिस्सा नहीं है। सांगानेर में हमारे पूर्वजो द्वारा जितनी छपाई की किस्मों का प्रयोग किया जाता था उनमें से अधिकांश लुप्त हो गई है। लुप्त किस्मों में मैण्ण की छपाई, लाल जमीन की फड़द व दुपट्टा, जाजम प्रिंट, काला दुपट्टा, चुंदड़ी साफा प्रमुख है।

हाथ ब्लॉक छपाई भारत में सदियों पुरानी परंपरा है लगभग 500 वर्ष पुराना है, हाथ ब्लॉक छपाई शिल्प एक विरासत के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है हाथ ब्लॉक छपाई में अधिक श्रम कम उत्पादन सीमित पानी प्राकृतिक रंग के साथ सांगानेरी प्रिंट बगरु प्रिंट अकोला प्रिंट आज ब्रांड नाम है जो पर्यावरण के अनुकूल व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता है ।

अजरक प्रिंट (बाड़मेर का अजरक प्रिंट प्रसिद्ध है. इस प्रिंट में लाल और नीले रंग का प्रयोग किया जाता है)
मलीर प्रिंट (मलीर प्रिंट बाडमेर का प्रसिद्ध है. कत्थई रंग का प्रयोग किया जाता है)
जाजम प्रिंट (इस प्रिंट के लिए छिपों का अकौला चित्तौडगढ़ प्रसिद्ध है) दाबू प्रिंट (मोम का दाबू सवाई माधोपुर का प्रसिद्ध है), गेहूं का दाबू (सांगानेर व बगरू) जयपुर का प्रसिद्ध है, मिट्टी का दाबू बालोतरा (बाड़मेर) का प्रसिद्ध है. सांगानेरी प्रिंट (यह प्रिंट सांगानेर (जयपुर) का प्रसिद्ध है, सांगानेरी प्रिंट बेल-बूटों की छपाई के लिए प्रसिद्ध है. इस छपाई में प्रसिद्ध वेल दाख बेल है।

बगरू प्रिंट यह प्रिंट बगरू (जयपुर) का प्रसिद्ध है. इस प्रिंट में काले रंग की प्रधानता है), मैण छपाई (मैण छपाई सवाई माधोपुर की प्रसिद्ध है). टुकड़ी प्रिंट(टुकड़ी प्रिंट जालौर की प्रसिद्ध है), तबक की छपाई (इस उपाई में मोम मिश्रित मिट्टी का प्रयोग किया जाता है. जयपुर और उदयपुर की तबक की छपाई प्रसिद्ध है. किशनगढ़, चित्तौडगढ़ व कोटा में रूपहली व सुनहरी छपाई कार्य किया जाता है।

हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद् जो कि भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय से प्रायोजित है. द्वारा हस्तशिल्पियों एवं निर्यातको की सहायतार्थ कार्य किया जाता है। भारतीय शिल्प संस्थान सूती वस्त्र शोध केंद्र एवं अन्य सरकारी संस्थान छपाई उद्योग के हित में कार्य कर रहे हैं। प्रात स्तर भी कुछ सरकारी संस्थान कार्य कर रहे है। रगाई, छपाई और सिलाई जो हमारा पुश्तैनी कार्य है उस में रोजगार की अपार सम्भावनाएं है ।

परंतु हम उससे काफी दूर हो गए है इसके पीछे हमारे पूर्वजों की एक सोच थी कि "रंगाई छपाई कार्य आज है पता नहीं कल रहेगा या नहीं इस सौच के कारण उन्होंने अपने बच्चों को शिक्षा नौकरी व वैकल्पिक रोजगार के क्षेत्र में भेज दिया। परिणाम स्वरूप अधिकांश शिक्षित बंधु अपने पुश्तैनी कार्य से श्रम गहन होने के कारण दूर होने लगे

इस व्यवसाय में रोजगार व लाभ की अपार संभावनाओं को देखते हुए अन्य जाति के लोग इस व्यवसाय में आने लगे तथा शीर्ष स्थान पर उस विषय को नियंत्रित करने लगे आज भी समाज के लोग इस व्यवसाय के शीर्ष पर नहीं है बल्कि छोटा बड़ा जॉब वर्क ही करते हैं। तकनीकी विकास के कारण रंगाई छपाई सिलाई में आमूल चूल परिवर्तन हो गया है इसलिए आज समाज के समक्ष न केवल समाज बंधुओं का छपाई से जोडना है बल्कि छपाई की लुप्त हो रही किस्मों को बचाने बढ़ाने तथा पर्यावरण प्रेमी बनाए रखने की चुनौती है। परतु आधुनिक तकनीक का उपयोग कर, समाज बंधुओं को इस व्यवसाय के शीर्ष पर पहुंचाने हेतु प्रेरित करना है आज रंग निर्माण से लेकर छापने तक की प्रक्रिया में कई व्यवसाय है जिनसे समाज बंधुओ का प्रवेश रोजगार की दृष्टि से ठीक रहेगा।

समाज का रंगाई एवं छपाई प्रकोष्ठ निम्न कार्य करेगा:

1. रंगाई छपाई व्यवसाय का संवर्धन कर समाज के प्राचीन छपाई बाहुल्य क्षेत्रों का वैभव पुनः लौटाना।

2. शिक्षा के बाद इस क्षेत्र में जाने की रुचि रखने वाले युवाओं को चिन्हित करना ।

3. रंगाई -छपाई, सिलाई से जुड़े अन्य व्यवसायों की सूची बनाना ।

4. रोजगार की दृष्टि से स्वरोजगार को बढ़ाने के लिए छपाई व्यवसाय करने वाले कारीगरो की संख्या बढ़ाना ।

5. पूर्वजों के समय छपाई की जितने किस्म थी. उनमें जो लुप्त हो रही है उनको प्राथमिकता के आधार पर संरक्षण प्रदान करना ।

6. छीपा, छीपी, छिपेटी, छपाई आदि नामों से जुड़े हुए स्थानो, मोहल्लों, गांव आदि में छपाई व्यवसाय से संबंधित गतिविधिया आयोजित करना।

7. छपाई व्यवसाय में प्राकृतिक रंगों का अधिकाधिक प्रयोग करने हेतु समाज बंधुओं को प्रेरित करना।

8. प्राकृतिक रंगों को विकसित करने हेतु प्रयोगशाला स्थापित करना ।

9. रंगों, लकड़ी के ठप्पो छपे वस्त्रों, छपाई प्रक्रिया आदि से संबंधित निजी क्षेत्र व सार्वजनिक क्षेत्रों में प्रदर्शनिया लगाने हेतु प्रयास करना ।

10. छपाई व्यवसाय के संवर्धन हेतु समाज में कार्यरत सहकारी संस्थाओं को सक्रिय करना तथा आर्थिक दृष्टि से कमजोर कारीगरो को लाभ प्रदान करने हेतु प्रयास करना ।

11. राज्य सरकार व केंद्र सरकार द्वारा रंगाई छपाई कला बोर्ड स्थापित करने हेतु प्रयास करना ।

12. छपाई व्यवसाय में कार्यरत समाज बंधुओं को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान पर पहुंचने के लिए प्रेरित करना ।

13. सरकार द्वारा छीपा समाज की सभी खापों के कार्यों रंगाई, छपाई, सिलाई, बंधाई) के संरक्षण के लिए एक गांव की स्थापना करना एवं इस दृष्टि से भूमि आवंटित करवाना।

14. छपाई से जुड़े सभी कार्यों में शोध को बढ़ावा देने हेतु कार्य करना।

15. फैशन डिजाइन पाठ्यक्रम में छपाई से जुड़े विषयों को शामिल करवाना ।

16. छपाई व्यवसाय से जुड़े सभी कार्यों को स्वरोजगार व कौशल विकास की दृष्टि से प्रमाण पत्र, पत्रोपाधि, स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम विश्वविद्यालयों में संचालित करने हेतु प्रयास करना ।

17. केंद्र सरकार, राज्य सरकार व रंग निर्माण कंपनियों द्वारा छपाई व्यवसाय में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले युवकों को छात्रवृत्ति प्रदान करने हेतु प्रयास करना ।

18. विभिन्न जाति समाजों के अनुसार पहले की तरह पहने जाने वाले वस्त्रों की छपाई को पुनः लोकप्रिय बनाना ।

19. छपाई के पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तक लेखन हेतु प्रयास करना तथा पुस्तक लिखने में लेखकों की मदद करना ।

20. संबन्धित प्रकोष्ठ की सहायता से व्याख्यान, संगोष्ठी, अभ्यास वर्ग, प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना ।

संगठन :-

1 राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी दवारा मनोनीत

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत शिक्षा प्रकोष्ठ अध्यक्ष /संयोजक

3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों, राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त समाज बंधुओं में से दो सदस्य ।

राजनीतिक प्रकोष्ठ

स्वतंत्र भारत में पैदा हुआ व्यक्ति आज जो कुछ भी है और जो कुछ नहीं है उसका सबसे बड़ा कारण जाति है। लोकतंत्र को जाति के प्रभाव से अछूता नहीं रखा जा सकता है। कोई भी राजनीतिक पार्टी अपने जातिगत मतदाताओं को खोना नहीं चाहती है. इसीलिए वह जाति विशेष के मतदाताओं की संख्या देखकर उमीदवारों का चयन करती है. विरोधी मतदाताओं को देखकर उमीदवारों का चयन करती है, दूसरी पार्टी के उमीदवार की जाति को देखकर भी उमीदवारों का चयन करती है देश की छोटी छोटी जातियों किसी भी राजनीतिक दल से संरक्षण प्राप्त कर आगे बढ़ गयी है परतु श्री नामदेव छीपा समाज इस दृष्टि से बहुत पीछे है

देश में "**श्री नामदेव छीपा समाज**" एक वृहत समाज है। यह समाज महाराष्ट्र में जन्में तथा पूरे देश में भक्ति आंदोलन से जुड़े प्रमुख संत "**संत शिरोमणि श्री नामदेव महाराज**" से जुडा हुआ है। क्षत्रिय वर्ण से अलग हुए इस समाज का प्रमुख व्यवसाय कपड़े से संबंधित रहा है जिस में रंगाई, छपाई, सिलाई एवं बंधाई प्रमुख है. इसी कारण पूरे देश में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। यह समाज राजस्थान में छीपा छिपी / दर्जी/ टॉक छीपा, महाराष्ट्र में शिपी/ रंगारा छीपा, मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में वैष्णव छीपा, नामदेव, नामा, ठाकुर, भावसार, रंगारा, उत्तर प्रदेश में गोहिल छिपी /ठाकुर/ छीपा/ राजपूत, पंजाब में छिम्बा आंध्र प्रदेश व तेलंगाना में छिपोलू गुजरात में छीपा भावसार आदि नामों से जाना जाता है। यह समाज देश में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) श्रेणी में आता है तथा एक अनुमान के अनुसार देश में इस समाज की 80 लाख से एक करोड़ के लगभग जनसंख्या है।

स्वभाव से सरल, आध्यात्मिक, कर्तव्यनिष्ठ एवं राष्ट्रवादी समाज राजनीतिक प्रतिनिधित्व की दृष्टि से अब तक उपेक्षित रहा है। इस समाज ने हिन्दू धर्म की रक्षार्थ अपने एक बहादुर योद्धा मोहकम सिंह छीपा को गुरु गोविंद सिंह को पाँच प्यारे के रूप में समर्पित किया था ।

यह समाज देश में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) श्रेणी में आता है। राजस्थान में अन्य पिछडा वर्ग (ओबीसी) की जनसंख्या लगभग 52 प्रतिशत है जो 82 जातियों में विभाजित है। अपनी जाति कई विधानसभाओं में प्रभाव पूर्ण भूमिका में रहती है।

छीपा समाज के कार्यकर्ता सभी राजनीतिक दलों में है, समाज बंधु गाँव में पंच, सरपंच नगर पार्षद का टिकट तो प्राप्त करने में तो सफल हो जाते हैं परंतु किसी भी राजनीतिक दल ने पूरे देश में कहीं भी आज तक विधान सभा / लोकसभा (राज्य सभा का टिकट समाज के किसी भी व्यक्ति को नहीं दिया है। अतः राजनीतिक क्षेत्र में कार्य करने हेतु राजनीतिक प्रकोष्ठ की आवश्यकता है।

समाज का राजनीतिक प्रकोष्ठ निम्न कार्य करेगा -

1. राजनीतिक दृष्टि से समाज की विभिन्न खापों को एक नाम से पहचान देकर दबाव समूह बनाने की दृष्टि से प्रयास करना।

2. समाज को राजनीतिक प्रतिनिधित्व देने की दृष्टि से विभिन्न राजनीतिक दलों को आग्रह करना।

3 समाज में राजनीतिक रुचि रखने वाले व्यक्तियों को विभिन्न राजनीतिक दलों में कार्य करने हेतु प्रेरित करना।

4. राजनीतिक दलों के संगठन स्तर पर समाज बंधुओं को पद दिलवाने हेतु प्रयास करना ।

5. समाज बाहुल्य क्षेत्री में प्रत्येक राजनीतिक चुनाव में समाज बंधुओं एवं महिलाओं को चुनाव लड़ने हेतु प्रेरित करना ।

6. समाज बंधुओं को चुनाव लड़ाने हेतु आर्थिक मदद करने की दृष्टि से राजनीतिक चुनाव कोष की स्थापना करना।

7. समय-समय पर समाज के कार्यक्रमों में राजनीतिक हस्तियों को आमंत्रित कर समाज से परिचित कराने का प्रयास करना।

8 समाज विकास की विभिन्न प्रकल्प के लिए सांसद व विधायक निधि से आर्थिक अनुदान प्राप्त करना।

9. संबन्धित प्रकोष्ठ की सहायता से व्याख्यान, संगोष्ठी अभ्यास वर्ग प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना।

संगठन

1. राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी दवारा मनोनीत

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत शिक्षा प्रकोष्ठ अध्यक्ष /संयोजक

3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियो, निर्वाचित जनप्रतिनिधियों / पूर्व जनप्रतिनिधियाँ राजनीतिक संगठन में कार्य करने वाले समाज बंधुओं में से दो सदस्य ।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य प्रकोष्ठ

समाज के प्रत्येक व्यक्ति की कामना होती है कि तह तथा उसका परिवार सुखी हो। परिवार के सभी सदस्य स्वस्थ हो। इसलिए कहते हैं **"पहना सुख निरोगी काया "** परिवार के सुखी रहने की पहली शर्त है. आरोग्यता। जान और समृद्धि प्राप्त करने की भी पहली शर्त है स्वास्थ्य - स्वास्थ्य जीवन की ऊर्जा है। जो व्यक्ति तनमन से स्वस्थ रहता है. वह हर क्षण आनंद की अनुभूति प्राप्त करता है आज तनावपूर्ण जीवन, आराम की उपेक्षा तथा अनियमित जीवनशैली के कारण अनेक प्रकार के रोग हो रहे है। कुपथ्य कुसंग प्रमाद, व्यसन और आवेग आदि को नियंत्रित कर ही 'आरोग्य की प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए अखिल भारतीय श्री नामदेव छीपा महासभा ने राष्ट्रीय स्तर पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य प्रकोष्ठ की स्थापना करने का निश्चय किया है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य प्रकोष्ठ का मुख्य उद्देश्य समाज में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य साक्षरता का संवर्धन करना है। गत दशक में समाज का आर्थिक दृष्टि से विकास हुआ है. सुख सुविधा की अधिकांश वस्तुओं तक समाज की पहुंच होने लगी है परंतु उसके बावजूद भी लोगों के स्वास्थ्य का स्तर काफी कमजोर है। वास्तव में स्वास्थ्य का संबंध शिक्षा से है न कि पैसे से किसी भी समाज में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से कार्य करने के लिए तीन तरह की व्यूह रचना बनानी पड़ती है- सुरक्षात्मक (प्रीवेंटिव), पोत्साहक (पमोटिव), एवं उप्चारात्मक (क्यूरेटिव)। इन तीनों ही दृष्टिकोण से किसी समाज के स्वास्थ्य का स्तर निर्धारित होता है परंतु हमारे देश में प्राय तीसरे दृष्टिकोण "**क्यूरेटिव**" पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है जिसके अंतर्गत डॉक्टरों का लक्ष्य बीमारी के इलाज तक सीमित हो गया है। प्रीवेंटिव दृष्टिकोण के अंतर्गत उन क्रियाकलापों पर जोर दिया जाता है जो बिमारी के पैदा होने से पहले ही उसका समाधान कर देते हैं अर्थात लोगों को इस प्रकार का ज्ञान दिया जाता है कि बिमारी होवे ही नहीं। प्रमोटिव दृष्टिकोण के अंतर्गत जो आज की स्थिति में स्वस्थ्य है उन्हें कैसे स्वस्थ्य बनाए रखा जाए, इसमे भी स्वस्थ्य बने रहने के गुण सिखाये जाते हैं परंतु हमारे देश में यह दोनों दृष्टिया कहीं दिखाई नहीं देती। बीमार होने पर समाज के कई बंधु गुणवत्तापूर्ण इलाज प्राप्त नहीं कर पाते।

इस दृष्टि से समाज का चिकित्सा एवं स्वास्थ्य प्रकोष्ठ मुख्य रूप से निम्न कार्य करेगा:-

1. समाज में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य साक्षरता का प्रसार करना ।

2. समाज में स्वस्थ जीवन शैली का प्रचार प्रसार करना ।

3. समाज में आवश्यकतानुसार चिकित्सा शिविर का आयोजन करना ।

4. गंभीर बीमारी की ओर समाज बंधुओं का ध्यानाकर्षण करना।

5. सरकार एवं निजी संस्थाओं द्वारा उपलब्ध कराए जाने वाली चिकित्सा सुविधाओं की जानकारी देना ।

6. समाज में सभी प्रकार की चिकित्सा शिक्षा के विस्तार हेतु प्रयत्न करना।

7.समाज में उपलब्ध चिकित्सकों का सर्वेक्षण एवं प्रशिक्षण |

10. वंश लेखकों के निवास स्थलों का भ्रमण करना।

11. राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों का आयोजन

12. कार्यशालाओं का आयोजन।

13 विशिष्ट व्याख्यानों का आयोजन।

14 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन।

15. पुस्तकालय की स्थापना व उसे शोध अनुसंधान के रूप में विकसित करना।

16. पाण्डुलिपियों का एक स्थान पर संग्रह व उनका डिजिटलाइजेशन।

17. वंशावलियों एवं परम्पराओं के विविध आयामों पर शोध एवं प्रकाशन।

18 वंशावलियों के वैज्ञानिक रूप से संरक्षण, उन्नत स्याही पर शोध इत्यादि सम्बंधित कार्यों हेतु प्रयोगशाला की स्थापना।

19 इस एतिहासिक धरोहर के प्रति जन जागृति पैदा करना व उसे व्यापकता देना।

20 अनुभवी भाट बड़वो द्वारा उनके परिवार के युवाओं को इस विद्या में निपुण बनाने के

लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना

21. भाट बड़ों को गोत्र अनुसार इतिहास लेखन हेतु प्रेरित करना

22. पारिवारिक इतिहास लेखन व वंश वृक्ष तैयार करने हेतु एक सॉफ्टवेयर बनाने का प्रयास करना।

संगठन

1. राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी दवारा मनोनीत

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत वंशावली लेखन एवं प्रबंधन प्रकोष्ठ अध्यक्ष /संयोजक

3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों में से दो सदस्य ।

समाज सुधार प्रकोष्ठ

हमारे श्री नामदेव छीपा समाज में अनेको अच्छाइयां है वहाँ कुछ बुराइयां भी हैं। अच्छाइयों को जहां दृढता पूर्वक अपनाते रहने की निष्ठा हमारे मन में होती है वहाँ हममें इतना साहस भी रहना चाहिए कि जिन कुरीतियों को हम अनुचित तथा समाज के लिए हानिकारक मानते हैं तथा जिनकी अब भावी पीढी को गलत संदेश देने की संभावना है, उनमें समयानुसार परिवर्तन का साहस भी दिखाये। युगानुकूल समाज के रीतिरिवाजों में परिवर्तन करना आवश्यक होता है तथा प्रनतिशील समाज इस को बुद्धिमता भी मानते है । यदि ऐसा नहीं करें तो समाज में कुरीतियां पैदा हो जाती है। उदाहरण के लिए वैदिक काल में यज्ञ आवश्यक धर्म माना जाता था कालांतर में उस विधान में विकृति आई तथा यज्ञों के नाम पर देवी-देवताओं पर भी वशु बलि पढ़ाई जाने लगी समय के परिवर्तन के साथ साथ यज्ञ में पशु बलि की बुराई को सुधारने के लिए भगवान बुद्ध ने अहिंसक आंदोलन चलाकर पशु बलि परंपरा का उन्मूलन कर कर दिया। बुद्ध द्वारा प्रसारित अहिंसा का सिद्धांत बहुत अच्छा माने जाने लगा परंतु कालांतर में उसके द्वारा लोग अकर्मण्य और आत्मरक्षा योग्य पौरुष से भी हीन होने लगे। तब भगवान शंकराचार्य ने उस में सुधार करने का आंदोलन आरंभ किया तथा धर्म की मान्यताओं का अहिंसा के विकृत स्वरूप का विरोध करके वेदान्त का प्रतिपादन किया तथा बौद्ध धर्म की जड़ ही हिला दी।

बहुत समय बीतने पर जब वेदान्त भी मिथ्या अहंकार का रूप धारण करने लगा, लोग व्यक्तिवादी बनने लगे तथा अपने मतलब से मतलब रखले लगे तो संतों ने भक्तिवाद का प्रचलन किया। मंदिरों में सामूहिक कीर्तन धर्मोत्सव का प्रसार करके उन्होंने हिंदू समाज में उस समय फैली हुई पृथकतावादी विचारधारा को सामूहिकता व संगठन के रूप में मोड़ा। खंडित हो रहा हिंदू समाज परस्पर मिलने जुलने का महत्व समझने लगे तथा विदेशी

आक्रमणों का जो तांता लगा हुआ था उसके विरुद्ध हिन्दू संगठित होने लगे तथा विरोध करने के संगठित प्रयास प्रारम्भ होने लगे। भक्तिवादी आदोलन भी कालांतर में डोग-पाखड़ का केंद्र बन गया तो स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की तथा समाज सुधार के कई कार्यक्रम प्रारम्भ हुए। हमारा शरीर भी जब बुड्ढा हो जाता है तब नया चोला धारण कर लेता है।

हर परिवर्तन असुविधाजनक होता है परंतु उसके बिना काम भी नहीं चलता सरकारी कर्मचारियों की बदली होती रहती है. सब कर्मचारी अपने अपने स्थान पर जमे बैठे रहे ती उनके राग, द्वेष का अनुचित प्रभाव जनता पर पड़ने लगेगा परेशानी होने की बात को जानते हुए भी कर्मचारियों का स्थानातरण होते रहना स्वाभाविक है रीति रिवाजों में भी परिवर्तन होते रहना चाहिए।

आज भी हमारे समाज में दहेज प्रथा मृत्यु भोज अंधविश्वास, शराब व नशीले पदार्थ का उपयोग चोरी-छिपे मांसाहार का बढ़ता उपयोग,बढ़ते तलाक, परिवारों में वृद्धो की उपेक्षा पैतृक व्यवसायों की उपेक्षा आदि कई बुराइयां है जिनको समाज बंधु अनुचित समझते हैं. समय के परिवर्तन के साथ साथ इनमें सुधार की अति आवश्यकता है । पूरे देश में सामूहिक विवाह अपने समाज ने प्रारम्भ किया परंतु उसमे भी विकृति आने लगी है। अतः समाज सुधार प्रकोष्ठ समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने की दृष्टि से निम्न कार्य करेगा।

1. प्रांत अनुसार सामाजिक बुराइयों को चिन्हित करना।

2. बुराइयों के उन्मूलन हेतु समाज का जन जागरण करना ।

3. स्थानीय पंचायत व्यवस्था, प्रांतीय समाज व्यवस्था तथा राष्ट्रीय समाज संगठन से नियम बनवा कर क्रियान्वित करने का प्रयास करना।

4 बुराई रहित किसी ग्राम, नगर या प्रांत को आदर्श समाज बनाना।

5. सामाजिक बुराइयों के स्थान पर विकल्प प्रस्तुत करना ।

6. सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने की दृष्टि से कार्य कर रहे समाज बंधुओं का सम्मान करना ।

7. संबन्धित प्रकोष्ठ की सहायता से व्याख्यान, संगोष्ठी अभ्यास वर्ग, प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना।

संगठन

1. राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी ट्वारा मनोनीत

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत समाज सुधार प्रकोष्ठ अध्यक्ष /संयोजक
3.सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों, समाज बंधुओं में से दो सदस्य ।

विधि एवं न्याय प्रकोष्ठ

टूटते परिवार एवं बिखरते रिश्ते हमारे समाज की सबसे बड़ी समस्या है। भाइयों में झगडों तथा पति-पत्नी में मन-मुटाव के कारण परिवार टूट रहे है तथा तलाकों की संख्या बढ़ रही है | एक जमाना था जब हमारे समाज के किसी परिवार में कितने ही लोग एक साथ रहते थे और परिवार हँसता खेलता था तथा एक दूसरे में काफी घनिष्ठता होती थी परिवार की आय ज्यादा नहीं होती थी परन्तु उसमें भी बहुत बरकत होती थी. घर में कोई खुशी की बात होती थी तो बाहर वालों को बुलाने की जरूरत ही नहीं पड़ती थी. आज परिवार टूटते जा रहे हैं, हमारे रिश्ते बिखरते जा रहे है. माँ-बाप, दादा-दादी, भाई-बहिन. चाचा-चाची, मामा-मामी. मौसा-मौसी. बुआ-फूफा इत्यादि रिश्ते दिखने में तो बहुत प्रिय लगते हैं, लेकिन उनमे मिठास नाम की चीज बिल्कुल समाप्त सी होती जा रही है. हरेक को अपनी अपनी पड़ी है कि बस सब कुछ हमें मिल जाये। कोई दिन ऐसा नहीं होता है जब कोई परिवार न टूट रहा हो.

माता-पिता के बाद सिर्फ भाई-बहन का रिश्ता सबसे करीब होता है। परिवार के टूटने का सबसे ज्यादा दुःख माता-पिता को होता है। उस मों के दिल के टुकड़े-टुकडे हो जाते है जब बच्चे उन्ही के सामने झगड़ा करते है और अलग होना चाहते है कोई भी उसकी
पीड़ा की समझना नहीं चाहता. बस सभी को अपनी जिन्दगी अपने हिसाब से जीनी है। परिवार को तोडना आसान है मगर उसको जोडना उससे भी कहीं ज्यादा मुश्किल होता है। अलग होते समय बहुत सी बाते ऐसी हो जाती है जो भूली नहीं जाती दिलों में गांठे बन जाती है जो कभी नहीं खुलती। कुछ लोग इन सबका जिम्मेदार बहुओं को मानते है। संपत्ति के बंटवारे में प्रायः मुकदमे हो जाते हैं भाइयों की आपसी बातचीत बंद हो जाती है शादी विवाह में आना जाना बंद हो जाता है।

इसके अतिरिक्त, आज के समय में ऐसे लगता है की तलाक एक परंपरा बन गयी है। छोटी- छोटी बात पर आज के समय में पति-पत्नी में रिश्ता टूटने की कगार पर आ जाता है। शादी जैसा बड़ा रिश्ता कभी भी किसी एक व्यक्ति पर निर्भर नहीं करता है। बल्कि इसमें पति और पत्नी दोनों का ही बराबर योगदान होना जरूरी होता है तलाक की नौबत आज के समय में लव मैरिज में भी आ जाती है। इसका सबसे बड़ा कारण है की आज के लोगों में धैर्य की कमी है। शादी के रिश्ते को पहले बहुत पवित्र माना जाता था। पति-पत्नी दोनों ही एक दूसरे के साथ सात जन्मों के साथ की कामना करते थे

तलाक के मुख्य कारणों में पति-पत्नी को एकदूसरे का व्यवहार पसंद न आना, दोनों में से किसी एक के भी घर वालों की दखलंदाजी दोनों या किसी एक को छोटी-छोटी बातो पर गुस्सा आना. छोटी-छोटी बातो पर बहस होने. अहम का टकराव होने, अच्छे सस्कारों की कमी आदि है। कुछ लडकियां शादी के बाद तलाक को कमाई का साधन भी बना लेती है आजकल के लड़के लड़किया प्रेम किसी और से करते हैं. पर कई बार घर वालों के डर से शादी परिवार वालो की पसंद से कर लेते हैं और फिर उन्हें उस रिश्ते में घुटन होने लग जाती है। पति-पत्नी के बीच प्रॉपर्टी का झगडा होने के कारण भी तलाक की नौबत आ जाती है। कई बार छोटे बच्चे की जिम्मेदारी के कारण भी तलाक हो जाता है. क्योंकि काम करने वाली महिलाये जब बच्चे को संभालती है. तो कही न कही उनकी सोच के

बीच टकराव हो जाता है। पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से आज के समय में लोग अपने शादीशुदा रिश्ते से बहुत जल्दी-बोर भी हो जाते हैं और नए साथी की तलाश करने लगते है विवाह से पूर्व पत्नी का नौकरी करना तथा विवाह के बाद ससुराल वालो के कहने के बावजूद नौकरी नहीं छोडना भी आजकल तलाक कारण बन जाता है।

इन सबके कारण समाज का कोई प्रांत, जिला, शहर गाँव ऐसा नहीं है जहा इनसे सबन्धित मुकदमा नहीं चल रहा हो ?

समाज के विधि एवं न्याय प्रकोष्ठ का उद्देश्य समाज के प्रत्येक स्थान को मुकदमा शून्य बनाना है। इस दृष्टि से यह प्रकोष्ठ निम्न कार्य करेगा:

1. समाज के विभिन्न बंधुओं के बीच चल रहे मुकदमों का वर्गीकरण करना।

2 मुकदमों के कारण चिन्हित करना।

3. राष्ट्रीय व प्रांतीय स्तर पर मुकदमों को सूचीबद्ध करना तथा विधि विशेषज्ञों की समितियां बनाना।

4. परिवार न्यायालय की तरह दोनों पक्षों को समझाने का प्रयास करना ।

5. अपरिहार्य परिस्थितियों में पीड़ित पक्ष को यथा योग्य सहायता प्रदान करने का प्रयास करना।

6 संयुक्त परिवार प्रथा, वर वधू चयन तथा विवाह संस्कार की पवित्रता पर संगोष्ठी आयोजित करना।

7. राष्ट्रीय स्तर पर मुकदमा विहीन स्थानों को सम्मानित करना।

8. आदर्श परिवार, आदर्श जोडी को को सम्मानित करना।

संगठन

1. राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी ट्वारा मनोनीत

2 सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी दद्वारा मनोनीत विधि प्रकोष्ठ अध्यक्ष /संयोजक

3.सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले समाज बंधुओ. संयुक्त परिवारों आदर्श पति- पत्नी में से दो सदस्य ।

समाज संपत्ति मंदिर प्रबंधन आध्यात्मिक एवं धरोहर प्रकोष्ठ

समाज संपत्ति से तात्पर्य श्री नामदेव छीपा समाज से संबंधित भूमि भवन मंदिर धर्मशालाएँ व सार्वजनिक महत्व की वस्तुओं से है जिन पर ग्राम शहर जिला प्रांत व राष्ट्रीय समाज संगठन का स्वामित्व है ये संपत्तिया समाज के लिए सम्मान की वस्तु बन गई है जिनका संरक्षण तथा विकास समाज के लिए महत्वपूर्ण है। देश में जहां- जहां श्री नामदेव छीपा समाज निवास करता है वहा पर उसकी कुछ न कुछ संपत्ति अवश्य है। प्रत्येक स्थान पर मंदिर मंदिर के सफल संचालन हेतु उससे जुड़ी हुई जमीन, दुकाने, सामूहिक भोजन हेतु खाने पीने व पकाने के बर्तन समाज द्वारा मंदिरों के संचालन हेतु शादी विवाह में दी जाने वाली भेंट स्वरूप धनराशि, बैंक में जमा धनराशि, छात्रावास, धर्मशालाएं, कृषि भूमि आदि होती है। जिन जिन स्थानों पर समाज बंधु सक्रिय तथा संवेदनशील है. वहां पर यह सब सुरक्षित हैं। इसके विपरीत जहां संगठन सक्रिय नहीं है. वहां पर समाज के लोगो द्वारा, गैर समाज के लोगों द्वारा समाज की संपत्ति पर अधिकार किया हुआ है। कई स्थानों पर जहां यह संपत्तियो सुरक्षित है वहां उनका समाज हित में अधिक उपयोग नहीं हो पा रहा है।

कई स्थानों पर मंदिरों के प्रबंधन हेतु किसी प्रकार की समिति नहीं है बल्कि वह किसी व्यक्ति या पुजारी के द्वारा संचालित होते हैं। कई वर्षों तक मंदिर का प्रबंधन किसी एक व्यक्ति है पुजारी के हाथ में होता है तो धीरे धीरे उस पर मालिकाना अधिकार कर लेता है। आज भी देश में नामदेव छीपा समाज से संबंधित कई मंदिरों के न्यायालय में मुकदमा चल रहे हैं। देश भर में समाज के सांस्कृतिक और पुरातात्विक महत्व के मंदिरों के प्रबंधन, भक्तों के लिए सुविधाओं और दान की गई नकदी और वस्तुओं के उपयोग के अध्ययन व सुरक्षा की अति आवश्यकता है। जहां जहां समाज के मंदिर, भवन, धर्मशालाए हैं वे उन स्थानों पर समाज विकास के केंद्र कैसे बने, यह भी विचारणीय बिंदु है। समाज संपत्ति मंदिर प्रबंधन एवं धरोहर प्रकोष्ठ का उद्देश्य पूरे देश में उपलब्ध समाज की सभी तरह की संपत्तियों, मंदिरों व धरोहरों का संरक्षण करने तथा उनको समाज उपयोगी बनाने की दृष्टि से कार्य करना है। मंदिर प्रबंधन एवं धरोहर प्रकोष्ठ निम्न कार्य होगे-

। ग्राम, शहर, जिला एवं प्रांत अनुसार समाज की संपत्तियों, मंदिरों एवं अन्य धरोहरों को सूची बुद्ध करना ।

2. विवादित मंदिर एवं संपत्तियों की सूची बनाना।

3. सभी स्थानों पर मंदिरों में संपत्तियों के प्रबंधन हेतु समितिया गठित करना एवं उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करना।

4. समाज के देवस्थान मंदिरों व संपत्ति के विधि विशेषज्ञों सूची तैयार करना उन्हें कार्य आवंटित करना

5. मंदिरों में नियमित आध्यात्मिक गतिविधिया संचालित करने हेतु स्थानीय समाज बंधुओं को प्रेरित करना।

6. समाज बंधुओं के निवास स्थान के अनुसार वहां पर उपलब्ध मंदिर के अंतर्गत सोना चांदी, बर्तन एवं बैंक जमाओं का लेखा-जोखा करना।

7. देश में श्री नामदेव ठीपा समाज किस सभी संपत्तियों के मूल्य का अनुमान करना ।

8. स्थानीय समाज बंधुओं को समाज की संपत्तियों से अतिरिक्त धनराशि अर्जित करने के लिए सुझाव देना ।

9. संपत्ति रहित स्थानीय समाज बंधुओं को संपत्ति सृजन हेतु सुझाव प्रदान करना।

10. संबन्धित प्रकोष्ठ की सहायता से व्याख्यान संगोष्ठी, अभ्यास वर्ग, प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना ।

संगठन

1 राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी ट्वारा मनोनीत

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत समाज संपत्ति, मंदिर प्रबंधन एवं धरोहर प्रकोष्ठ अध्यक्ष संयोजक

3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले समाज बंधुओं, समाज की संपति के लिए मुकदमा लड़ रहे सदस्यों में से दो सदस्य ।

सोशल मीडिया एवं तकनीकी प्रकोष्ठ

प्रत्येक शताब्दी अपनी किसी ने किसी चीज के लिए पहचानी जाती है। 21 वीं शताब्दी इंटरनेट और वेब मीडिया की शताब्दी मानी जा रही है 23) वीं सदी के अंत तक दुनिया में सशक्त मीडिया माध्यमों तीव्र गति से विस्तार हुआ। इस विस्तार का यह परिणाम हुआ की मीडिया की शक्ति आम जनता के हाथ में आ गई मीडिया के विभिन्न आयामों को देखते हुए ऐसा लगता है कि वर्तमान समय परिवर्तन का समय है संप्रेषण के ऐसे नए-नए तरीके तथा नए माध्यम आ गए है जो हमारे जीवन का हिस्सा बन गए है। इस दृष्टि से सोशल मीडिया समाज के बंधुओं को जोड़ने का नया माध्यम है जो यह कार्य कर रहा है। सोशल मीडिया के द्वारा हम समाज विकास की सभी बाते छीपा समाज के आम व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं इस दृष्टि से सोशल मीडिया प्रकोष्ठ को हमे सुदृढ बनाना है।

सोशल मीडिया के कई रूप है जिनमें कि इंटर नेट फोरम, वेबलॉग, सामाजिक ब्लॉग माइक्रोब्लागिंग, विकीज, सोशल नेटवर्क, पॉडकास्ट, फोटोग्राफ, चित्र, चलचित्र आदि सभी आते

है। अपनी सेवाओं के अनुसार सोशल मीडिया के लिए कई संचार प्रौद्योगिकी उपलब्ध हैं। समाज में हमारे समाज में व्हाट्सएप तथा फेसबुक सोशल मीडिया के दो बड़े साधन उपयोग किए जा रहे है. इनके उपयोगकर्ता भी दिन प्रतिदिन बढ़ रहे है. जानकारी भी बढ़ रही है परंतु साथ ही साथ इन का गलत उपयोग भी हो रहा है। अतः समाज को सकारात्मक दृष्टि देने हेतु सोशल मीडिया प्रकोष्ठ की आवश्यकता है. सोशल मीडिया प्रकोष्ठ के निम्न कार्य होंगे:-

1. श्री नामदेव छीपा समाज के सभी संगठनों के कार्यकर्ताओं को सोशल मीडिया की कार्यप्रणाली से परिचित कराना ।

2. सभी कार्यरत संगठनों को वेब स्थलों का निर्माण करने हेतु प्रेरित करना ।

3. प्रांत अनुसार सोशल मीडिया प्रकोष्ठ गठित करना ।

4. राष्ट्रीय प्रांतीय कार्यकारिणी के सभी सदस्यों को सोशल मीडिया तकनीक का उपयोग करना सिखाना ।

5. अखिल भारतीय श्री नामदेव छीपा महासभा का वेब स्थल, फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग, अणु डाक पता तैयार करना।

6. समाज का ऑनलाइन समाचार पत्र प्रकाशित करना।

7. समाज के सभी पत्रिकाओं की ऑनलाइन उपलब्ध कराना।

8. समाज की समस्याओं की जानकारी हेतु ऑनलाइन सर्वेक्षण पद्धति विकसित करना ।

9. प्रांत अनुसार कप्यूटर विज्ञान के स्नातको /स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों की सूची तैयार करना ।

10. सोशल मीडिया संचार माध्यम प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हेतु समाज के युवाओं को तैयार करना ।

संगठन

1. राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत सोशल मीडिया प्रकोष्ठ अध्यक्ष/ संयोजक

3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों में से दो सदस्य ।

संस्कृति एवं संस्कार प्रकोष्ठ

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समय रूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य कला वास्तु आदि में परिलक्षित होती है। संस्कृति का वर्तमान रूप किसी समाज के दीर्घ काल तक अपनायी गयी पद्धतियों का परिणाम होता है। संस्कृति जीवन की विधि है। जो भोजन हम खाते हैं. जो कपडे पहनते हैं, जो भाषा बोलते हैं और जिस भगवान की पूजा करते हैं, ये सभी संस्कृति के भाग है। सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि संस्कृति उस विधि का प्रतीक है जिसके आधार पर हम सोचते हैं। और कार्य करते हैं। इसमें वे अमूर्त/ अभौतिक भाव और विचार भी सम्मिलित है जो हमने एक परिवार और समाज के सदस्य होने के नाते उत्तराधिकार में प्राप्त करते हैं। संस्कृति में रीतिरिवाज, परम्पराएँ, पर्व, जीने के तरीके, और जीवन के विभिन्न पक्षों पर व्यक्ति विशेष का अपना दृष्टिकोण भी सम्मिलित है।

मूलतः संस्कार का अभिप्राय उन धार्मिक कृत्यों से है जो किसी व्यक्ति को अपने समुदाय का पूर्ण रूप से योग्य सदस्य बनाने के उद्देश्य से उसके शरीर, मन और मस्तिष्क को पवित्र करने के लिए किए जाते हैं, किन्तु हिंदू संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति में अभीष्ट गुणों को जन्म देना भी है। प्राचीन भारत में सस्कारों का मनुष्य के जीवन में विशेष महत्व था।

संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपनी सहज प्रवृतियों का पूर्ण विकास करके अपना और समाज दोनों का कल्याण करता था। ये संस्कार इस जीवन में ही मनुष्य को पवित्र नहीं करते थे, उसके पारलौकिक जीवन को भी पवित्र बनाते थे। हमारे चित. मन पर जो पिछले जन्मों के पाप कर्मों का प्रभाव है उसको हम मिटा दें और अच्छा प्रभाव को बना दे उसे संस्कार कहते हैं। संस्कार हमारे धार्मिक और सामाजिक जीवन की पहचान होते हैं। यह न केवल हमें समाज और राष्ट्र के अनुरूप चलना सिखाते है बल्कि हमारे जीवन की दिशा भी तय करते हैं।

भारतीय संस्कृति में मनुष्य को राष्ट्र, समाज और जनजीवन के प्रति जिम्मेदार और कार्यकुशल बनाने के लिए जो नियम तय किए गए हैं उन्हें संस्कार कहा गया है। इन्हीं संस्कारों से गुणों में वृद्धि होती है। हिंदू संस्कृति में प्रमुख रूप से 16 संस्कार माने गए हैं जो गर्भाधान से शुरू होकर अंत्येष्टी पर खत्म होते हैं। इन संस्कारों के नाम है-

(1) गर्भाधान संस्कार, (2) पुंसवन सस्कार, (3) सीमन्तोन्नयन संस्कार, (4) जातकर्म संस्कार, (5) नामकरण संस्कार (6) निष्क्रमण संस्कार. (7) अन्नप्राशन संस्कार, (8) मुंडन संस्कार, (9) कर्णवेधन संस्कार, (10) विदयारंभ संस्कार, (11) उपनयन संस्कार, (12) वेदारंभ संस्कार, (13) केशांत संस्कार, (14) सम्वर्तन संस्कार (15) विवाह संस्कार और (16) अन्त्येष्टि संस्कार।

व्यक्ति पर प्रभाव संस्कारों से हमारा जीवन बहुत प्रभावित होता है। संस्कार के लिए किए जाने वाले कार्यक्रमों में जो पूजा, यज्ञ, मंत्रोच्चरण आदि होता है उसका वैज्ञानिक महत्व साबित किया जा चुका है।

संस्कार किसी पेड पर नहीं पनपते हैं. दीवारी से नहीं टपकते है. संस्कार तो घरपरिवार, समाज, शिक्षालयों और आसपास के परिवेश से सृजित होते हैं।

संस्कारों की सबसे अधिक जिम्मेदारी माता पिता, परिजनों और शिक्षकों की होती है। यह भी सच है कि संस्कार मात्र कहने से. बोलने से नहीं आते है बल्कि ये तो व्यवहार से आते है. आचरण से आते हैं. सदकर्म से आते हैं और चारित्रिक उज्ज्वलता से आते हैं। मातापिता जैसा व्यवहार करेंगे, वैसा ही लगभग उनके बच्चे करते हैं। हमेशा याद रखें, अपनी हर हरकतो. कार्यों और व्यवहार का बारीक निरीक्षण अपने बच्चे कर रहे हैं।

संस्कारों के माध्यम से मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण एव विकास होता था। जीवन के प्रत्येक चरण में संस्कार मार्ग दर्शन का काम करते थे। उनकी व्यवस्था इस प्रकार की गयी थी कि वे जीवन के प्रारम्भ से ही व्यक्ति के चरित्र एवं आचरण पर अनुकूल प्रभाव डाल सकें ।

परिवारों की समस्याएँ किशोरों, युवाओं प्रौढो एवं महिलाओं से भी संबन्धित है। किशोर वर्ग के समक्ष आधुनिक शिक्षा एवं पाश्चात्य प्रभाव की समस्या है। प्रौढो एवं बृद्धों को यथोचित सम्मान प्राप्त नहीं है। कॉलेजी का खुला वातावरण युवाओं को कभीकभी अपराध एवं पतन की ओर धकेल देता है। कामकाजी महिलाओं पर दुहरा बोझ पड़ता है। फिजूल खर्च, भोगवादी संस्कृति एवं नई विलासिता पूर्ण सामगी भी समस्याए उत्पन्न करती है। इन सबके विश्लेषण एवं समाधान पर गहन विचार विमर्श कर समाधान निकालना चाहिए। आज बालकों में संस्कार नहीं है ऐसा भ्रामक वातावरण बनाया जा रहा है जबकि उन्हें संस्कारित करने की जिम्मेदारी हमारी है यदि कोई भी परिवार टूटता है और बच्चा असंस्कारित होकर समाज और देश को तोड़ने जैसा कुत्सित कर्म करता है तो यह जिम्मेदारी परिवार के मुखिया की है। बालक अपने जन्म के साथ अपनी प्रकृति लेकर आता है। अतउसका अध्ययन कर उसमें : समाज के लिए उपयोगी संस्कारों का संवर्धन करना मुखिया का कार्य है स्वतंत्रता के बाद का कालखण्ड व्यक्तिवादी सोचका रहा है अतः उसका अध्ययन कर उसमें समाज के लिए उपयोगी सस्कारों का संवर्धन करना मुखिया का कार्य है।

स्वतन्त्रता के बाद व्यक्तिवादी सोच का कालखंड रहा है अतः भारतीय संस्कृति को विस्मरण करने से परिवार ही नहीं टूटे अपित् समाज की स्थिति भी दयनीय हो गई है। इसी कारण हम अपने सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों से दूर होते चले गए। आज जब परिवारों का संकट सभी आयु वर्ग के व्यक्तियों के समक्ष उपस्थिति हो चला है अतः इस विषय पर व्यापक चिन्तन की आवश्यकता है।

संस्कार माता-पिता से मिलते हैं। जैसे हीरा जौहरी के पास जाने के बाद ही कीमती होता है और मिट्टी कुम्हार के पास जाने के बाद कुंभ बनती है तथा कलश बनने उसका उपयोग मांगलिक कार्यों में होता है। उसी प्रकार मनुष्य का जीवन माता-पिता से संस्कारित होकर आदर्श मनुष्य बन जाता है। संस्कार देने की उम्र बचपन से १० वर्ष तक होती है इस उम्र में जो संस्कार मिलेगे वैसा ही मनुष्य बनेगा। माता-पिता स्वयं संस्कारवान होते हैं तो बच्चे/ सन्तान भी अच्छी संस्कारित होती है।

संस्कृति एवं संस्कार प्रकोष्ठ निम्न कार्य करेगा-

-1. समाज बंधुओं को समाज की पवित्र संस्कृति एवं रीती रिवाजों की जानकारी प्रदान करना ।

2. हिंदू धर्म के सोलह संस्कारों का प्रचार प्रसार करना ।

3. शिशु शिक्षा पाठ्यक्रम तैयार करना तथा प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना ।

4. आदर्श गृहस्थआश्रम संस्कार हेतु प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना।

5. समाज बंधुओं को पौढावस्था एवं वृद्धावस्था कि शिक्षा प्रदान करना करने हेतु प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना

6 आदर्श परिवार हेतु आदर्श दिनचर्या का प्रचार प्रसार करना ।

7. धर्मानुकूल स्वरोजगार संचालित करने हेतु समाज बंधुओं को प्रेरित करना ।

8. समाज विकास हेतु दान देने की प्रवृत्ति का प्रचार-प्रसार करना ।

9. वर्ष में एक बार संस्कृति व संस्कार की परीक्षा आयोजित करना ।

10. प्रचलित रीति-रिवाजों मांगलिक अवसरों पर गाए जाने वाले गीतों को संरक्षण करना, बड़ी बूढी महिलाओं की जानकारी में पुराने गीतों की सीडी बनाना ।

11. संबन्धित प्रकोष्ठ की सहायता से व्याख्यान, संगोष्ठी, अभ्यास वर्ग प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना।

संगठन

1. राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत संस्कृति एवं संस्कार प्रकोष्ठ अध्यक्ष /संयोजक
3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों में से दो मदस्य ।

वृहत नामदेव छीपा समाज प्रकोष्ठ

वृहत नामदेव छीपा समाज से तात्पर्य छीपा समाज की उन समस्त खापों के समूह से है जो विभिन्न प्रांतो में अलग-अलग नामो से पहचानी जाती है तथा भविष्य में किसी न्यूनत्तम कार्यक्रम के आधार पर एकत्र होकर समाज विकास के कार्य को आगे बढ़ाते हुए देश में राजनीतिक दृष्टि से दबाव समूह का कार्य करने की इच्छा रखता है छीपा समाज का इतिहास महाराज सहस्त्रबाहु से प्रारंभ होता है। जब परशुरामजी ने पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन करने का निश्चय किया था तथा इस कड़ी में महाराज सहस्त्रवाह का सेना सहित संहार हो गया था तो उनके 5 पुत्र शूरसेन, कृष्णादित्य, कमलादित्य, भृगुदत्त तथा सत्यजीत जीवित बचे थे। उन्होंने भाग कर माता लाच्छी (हिंगलाज माताजी) के मंदिर में शरण ली परशुराम जी ने पांचों भाइयों को प्राण दान देते हुए क्षत्रिय धर्म छुडवा कर भविष्य में वैश्य, वाणिज्य एवं शिल्प कर्म करने का वचन लिया माता लाच्छी ने पांचों भाइयों को आदेश दिया कि वे वस्त्रों की रंगाई, छपाई, सिलाई तथा उनके व्यापार का कार्य करते हुए वैष्णव धर्म का पालन करें।

महाराज शूरसेन से गोहिल छीपा, कृष्णादित्य से टॉक छीपा कमलादित्य से भावसार छीपा भृगुदत्त से दिलवारी छीपा तथा सत्यजीत से रंगारा छीपाओं की खाँप प्रारंभ हुई।

वंशावली लेखक भाट/ बडवा की पोथी में खापों की जानकारी मिलती है परतु यह पांच खापे भी अपनी सुविधानुसार अलग अलग नाम रखकर अपने प्रान्तों में अलग अलग नामों से प्रसिद्ध हो गई। राजस्थान में छीपा,छीपी, नामा, टॉक उत्तर प्रदेश में गोहिल क्षत्रिय, छीपा, छीपी, कोकुतस्थ, मध्यप्रदेश में वैष्णव छीपा, नामदेव, ठाकुर, भावसारः महाराष्ट्र में शिंपी, रंगारा हरियाणा में छिपी, छिम्बा, पंजाब में छिम्बा गुजरात में छीपा, भावसार आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना में छीपोलु (मेरु) आदि नामों से जाना जाता है।

छीपा समाज में **"26 अक्टूबर, 1270, कार्तिक शुक्ल एकादशी संवत् १३२७, रविवार"** को सूर्योदय के समय **संत शिरोमणि श्री नामदेवजी** का जन्म 'नरसी नामदेव जिला हिंगोली मराठवाडा, महाराष्ट्र (भारत) में हुआ। नामदेव जी भारत के प्रसिद्ध संत माने जाते हैं। विश्व भर में उनकी पहचान "संत शिरोमणि" के रूप में जानी जाती है। महाराष्ट्र के सातारा जिले में कृष्णा नदी के किनारे बसा नरसी बामणी गाँव, जिला परभणी उनका पैतृक गांव है संत शिरोमणि श्री नामदेव जी का जन्म शिम्पी (मराठी), जिसे राजस्थान में " छीपा " भी कहते है. परिवार में हुआ था। चूंकि संत शिरोमणि नामदेव जी महाराज अपने समाज से हुए हैं अब अधिकांश खापे अपने आप को नामदेव जी से जोड़ने लगी है भक्ति आंदोलन के दौरान नामदेव जी अधिकांश उत्तरी भारत मे रहकर भक्ति का प्रचार प्रसार किया इसलिए अधिकांश खापे उनसे जुड़ी हुई है। परतु आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में समाज के लोग शैव भक्त है।

आज देश में नामदेव समाज एक बहुत बड़ा समाज है परंतु अलग अलग जगह पर अलग अलग नामों से जानने के कारण एक राजनीतिक शक्ति के रूप में प्रकट नहीं हो पाया। अतः आज देश में सभी खापों का एकीकरण करने की दृष्टि से कार्य करने की आवश्यकता है। पूर्व में सभी खापों में एकीकरण करने के कई कार्य किए गए, उससे एकता का वातावरण बनने लगा है। सभी खापों में अब आपस में शादी विवाह भी होने लगे हैं। परंतु अलग-अलग खापों में भी कई संगठन होने के कारण एकीकरण के मार्ग में बाधाएं उपस्थित हो रही है। अतः अपनी गोहिल छीपा समाज खाँप द्वारा एक प्रकोष्ठ बनाया जाना चाहिए।

बृहत नामदेव छीपा समाज प्रकोष्ठ निम्न कार्य करेगा -

1. सभी खापों के इतिहास की जानकारी प्राप्त करना नामदेव जयंती एवं ज्ञानोदय दिवस को राष्ट्रीय स्तर पर एक साथ मनाना।
2. सभी खापों के वंश लेखको भाट बड़वों को आमंत्रित कर उनके गोत्र कुलदेवी, इतिहास आदि की जानकारी लेना
3. सभी खापों के राष्ट्रीय संगठनों की सूची बनाना तथा उनसे वार्ता प्रारंभ करना ।
4 सभी खापों के लिए एक सामान्य नाम, प्रतीक चिन्ह (लोगो), प्रार्थना, गीत तथा झंडे का निर्माण करना ।
5. सभी खापों में एकता स्थापित करना उनके लिए वार्षिक न्यूनतम एजेंडा निर्धारित करना जिससे सभी समाज बंधु एकत्र होकर सामूहिक शक्ति प्रदर्शन कर राजनीतिक दबाव समूह बनाया जा सके ।
6. छपाई, सिलाई रंगाई, बंधाई आदि क्षेत्रों में समाज के युवकों को प्रशिक्षण देना ।
7. सभी खापों के सामूहिक विवाह एक साथ आयोजित करना ।
8. सभी खापों के पैतृक कार्यों का पाठ्यक्रम बनाकर कौशल विकास कार्यक्रम की सूची में जुड़वाना ।
9. सभी खापों की दृष्टि से उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन
10. राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर पर सभी खापों की सामूहिक गतिविधियोंके लिए सरकार से निशुल्क जमीन आवंटित करवाना ।
11. सभी खांपों का एक राष्ट्रीय फेडरेशन बनाना या दिल्ली स्थित नामदेव मिशन को पुनः सक्रिय करना ।
12. सभी खांपों दवारा एकीकरण के लिए किए गए कार्यों का संकलन करना ।
13. सभी खांपों के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ताओं. शिक्षाविदों, व्यवसायियों, प्रशासनिक अधिकारियों पेशेवरो अन्य लब्ध प्रतिष्ठित समाज बंधुओं की सूची बनाना।
14 सभी खापों के पत्रिकाओं, वेब स्थल सोशल मीडिया स्थल आदि की जानकारी प्राप्त करना ।
15 सभी खापो के प्रकाशित साहित्य का संकलन करना ।
16. उपयुक्त बिंदुओं से संबंधित विषयों पर विभिन्न खापों के साथ मिलकर संगोष्ठी आयोजित करना ।

संगठन

1. राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत संस्कृति एवं संस्कार प्रकोष्ठ अध्यक्ष /संयोजक

3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों में से दो सदस्य।

अंतर्राष्ट्रीय नामदेव छीपा प्रकोष्ठ

हमें यह जानकर प्रसन्नता है कि समाज के कई स्वजाति बंधु भारत से बाहर रहकर समाज का नाम रोशन कर रहे हैं तथा समाज की एक वैश्विक पहचान बनाने में योगदान कर रहे है। ये बंधु विशेष रूप से अमेरिका, कनाडा, इंगलैंड, नार्वे, जर्मनी आदि देशों में रहते हैं। समाज के युवाओं से जब प्रवासी लोगों के कार्यों के बारे में चर्चा होती है तो वह उनसे प्रेरणा ग्रहण करना चाहते हैं तथा उनके मन में भी प्रवासी बंधुओं जैसी कठिन मेहनत कर विश्व में समाज का नाम रोशन करने की इच्छा होती है। यह प्रकोष्ठ समाज के युवकों और उनके बीच एक पुल का काम करना चाहता है जिसके अंतर्गत यह नामदेव समाज के विकास की गाथा की वैश्विक स्तर पर ले जा सके। संलग्न प्रोफार्मा में आवश्यक जानकारी ईमेल से प्रवासी समाज बंधुओं . प्राप्त की जा सकती है। अन्य समाज बंधुओं से भी उनसे सबन्धित विदेशों में रह रहे समाज बंधुओं की जानकारी . प्राप्त की जा सकती है ।

अंतर्राष्ट्रीय छीपा प्रकोष्ठ के कार्य

1. विदेशों में रह रहे प्रवासी समाज बंधुओं की जनगणना करना ।

2. विदेशी में रह रहे प्रवासी समाज बंधुओं के व्यवसायियों सेवा क्षेत्र में लगे बंधुओं की जानकारी करना ।

3 विदेशों में रह रहे युवक-युवतियों के परिचय सम्मेलन का आयोजन करना ।

4. प्रत्येक देश के अनुसार प्रवासी समाज प्रमुख मनोनीत करना ।

5 प्रवासी समाज बंधुओं के लिए 2 वर्ष में एक बार उन से संबंधित विषयों पर संगोष्ठी आयोजित करना ।

6. विदेशों में स्थाई निवास कर रहे प्रवासी समाज बंधुओं के संबंध में वेब स्थल व पत्रिका में लेख प्रकाशित करना ।

संगठन

1. राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत वंशावली लेखन एवं प्रबंधन प्रकोष्ठ अध्यक्ष /संयोजक

3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों में से दो सदस्य ।

International Namdev Chhipa Cell

(अंतर्राष्ट्रीय नामदेव छीपा प्रकोष्ठ)

1. Name of the head of the family:……..

2. Date of birth:……..

3. Education:……..

4.Gotra:……

5. Name of the country:……..

6. Citizenship of the country: Yes/No……..

7.E-mail:……

8.Contact number:--……

9. Residence address:-……..

10. Business/ Office address:-……..

11. Post in company/ business:……..

12. Address in India……..

……

……..

Signatures

कार्यरत संगठन एवं कौशल संवर्धन प्रकोष्ठ

समाज में समाज बंधुओं को मार्गदर्शन करने, उनको समाज से जोड़े रखने तथा उनकी समाज विकास में सकारात्मक भूमिका आश्वस्त करने की दृष्टि से समाज में हमेशा किसी न किसी प्रकार का संगठन रहा है। इसलिए वर्षों से समाज में कई संगठन कार्य कर रहे है। हर समय उनकी कार्यकुशलता मापने के कइ पैमाने रहे हैं. पदाधिकारियों के चयन की प्रक्रिया भी अलग-अलग रही है। आज जब हम उन संगठनों को देखते हैं. तो ऐसा लगता है जिन उद्देश्यों के लिए यह संगठन खड़े किए गए थे उनमें वे काफी सीमा तक सफल नहीं हो पा रहे हैं. इन सब के अलग-अलग कारण हो सकते है। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि ये संगठन आज के समाज की आवश्यकता के अनुसार कार्य करें तथा समाज को लाभान्वित करें इसलिए समाज में कार्यरत संगठन प्रकोष्ठ निर्माण की आवश्यकता है।

कार्यरत संगठन प्रकोष्ठ निम्न कार्य करेगा

। प्रांतानुसार कार्यरत संगठनों की सूची बनाना।

2. उनके उद्देश्य, संगठन प्रक्रिया, अभी तक किए गए कार्यों की समीक्षा करना

3. उनके कार्यालय, कार्यकर्ता, आय के स्रोत एवं व्यय की मंदो की जानकारी करना

4. कार्यों की समीक्षा पश्चात उन्हें उपयुक्त सुझाव देना।

5. कार्यरत संगठन में युवाओं एवं बुजुर्गों के समन्वय की आवश्यकता को बताना।

6. उनके संगठन से जुड़ी हुई सरकारी योजनाओं की जानकारी देना तथा उनसे लाभ प्राप्त करने के सुझाव देना।

7. कार्यरत संगठनों की कार्य कुशलता बढ़ाने के लिए समय-समय पर व्याख्यान, संगोष्ठी एवं कार्यशाला आयोजित करना

संगठन

1. राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत 1

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत कार्यरत संगठन प्रकोष्ठ के अध्यक्ष / संयोजक

3. सहवृत सदस्य:- इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों में से दो सदस्य ।

समाज साहित्य लेखन एवं प्रकाशन प्रकोष्ठ

समाज साहित्य किसी समाज की संस्कृति, रिती-रिवाज, मूल्य, संस्कार, इतिहास, खानपान, व्यवसाय, कला आदि की जानकारी प्रदान करने में सकारात्मक भूमिका निभाता है। जिससे हम अपनी विरासत की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। साहित्य समाज का दर्पण है। इसलिए समाज को आगे बढ़ाने के लिए साहित्यलेखन प्रकाशन एवं उसका अध्ययन आवश्यक है।साहित्य के बिना समाज की सभ्यता व संस्कृति निर्जीव है समाज के साहित्यकारों का कर्तव्य है कि वह ऐसी साहित्य का सृजन करें जो समाज में एकता, भाईचारा, समानता तथा आर्थिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति का जीवन स्तर उठाने में मदद कर सके। जानकारी दे सके तथा समाज के कार्यरत संगठनों का मार्गदर्शन कर सके।
नामदेव समाज में साहित्य लेखन को प्रकाशन कार्य का नितांत अभाव है संत नामदेव के सबंध में कुछ प्रकाशन अवश्य हुआ है परंतु समाज के विभिन्न खातों के इतिहास की जानकारी, उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी, उनके मूल कार्यों के ऐतिहासिक विकास की जानकारी का नितांत अभाव है। समाज के युवा व वयस्क आज भी समाज की वैयक्तिक जानकारी देने में असमर्थ है। आज कुछ मौलिक पुस्तकों के लेखन की आवश्यकता है जो प्रत्येक नामदेव समाज के परिवार में उपलब्ध रहे। साहित्य की दृष्टि से समाज में निम्न शीर्षको पुस्तक लेखन प्रारंभ किया जा सकता है.-

। बृहत नामदेव छीपा समाज

2. श्री नामदेव छीपा समाज की कॉपी खांपे

3. संत शिरोमणि श्री नामदेव जी का जीवन चरित्र

4 संत शिरोमणि श्री नामदेव जी के चमत्कार

5 वस्त्र छपाई उद्योग एवं प्राकृतिक रंग

6. हमारे रीति रिवाज एवं गीत

7. छीपा समाज समाज की कुल देविया

8. समाज के व्यवसायीः शून्य से शिखर तक

9. छीपा समाज के मंदिर

10. छीपा समाज के छात्रावास एवं धर्मशालाये

11. छीपा समाज के प्रवासी बंधु

12. छीपा समाज की सफल महिलाएं

13 छीपा समाज में निजी क्षेत्र की कंपनिया

संगठन

1. राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी दवारा मनोनीत

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा समाज साहित्य लेखन एवं प्रकाशन प्रकोष्ठ अध्यक्ष /संयोजक

3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों में से दो सदस्य ।

वंशावली लेखन एवं प्रबंधन प्रकोष्ठ

हमारे समाज में वंशावली लेखक जिन्हे राव, बडवा, भाट, जागा आदि नामी से पुकारते थे. नियमित एक 2 वर्ष से प्रत्येक परिवार में आकर परिवार की वंशावली लेखन का कार्य करते थे। इन्हें प्रत्येक परिवार सम्मान के साथ आमंत्रित करता था तथा वे भी यजमान के परिवार की वंशावली रिकॉर्ड रखते थे। परंतु स्वतंत्रता के बाद यह परंपरा प्राय लुप्त हो रही है आज भी इनके पास हमारे परिवारों का सैकड़ों वर्षों का रिकॉर्ड उपलब्ध है। अतः इस परंपरा को पुनः प्रारंभ करने की आवश्यकता है। वर्तमान में कुछ जगाओ, बड़वों से बात हुई है जी अभी भी समाज में वंश लेखन का कार्य करते हैं जिन्हें अन्य क्षेत्रों में भी आमंत्रित करने की आवश्यकता है।

। मदन सिंह राव मोबाइल नंबर 8827889483, कार्य क्षेत्र मध्य प्रदेश

2. श्री काशीनाथ भट्ट मोबाइल नंबर 6376 413514. कार्यक्षेत्र राजस्थान, गुजरात

3. भरत सिंह बडवा, मोबाइल नंबर 98286 68159, जयपुर, सवाई माधोपुर

यह प्रकोष्ठ निम्न कार्य करेगा

1. समाज से पूर्व में जुड़े भाट, बड़वों की जानकारी प्राप्त करना।

2. उपलब्ध बडवा समाज को राज्य जिले आवंटित करना

3 गोत्र अनुसार कुलदेवी/ देवता की समाज को जानकारी देना

4. ओन लाइन परिवार वंश वृक्ष तैयार करने हेतु परिवारों को प्रशिक्षण देना

5. भाट, बड़वों के पास उपलब्ध वंशावली के संरक्षण हेतु प्रयास करना

6. भाट, बड़वों के उपलब्ध न होने पर वंशावली लेखन एवं प्रबंधन प्रकोष्ठ गोहिल छीपा जाति. समाज के घर घर जाकर उसके सगे-संबन्धियों की उपस्थिति में संक्षेप में सृष्टि की रचना से लेकर उसके पूर्वजों के समय की इतिहास की ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक घटनाओं का वर्णन करते हुए उस व्यक्ति का वंशक्रम अपनी हस्तलिखित पोथियों में आलेखित करना।

7. हस्तलिखित पोथियों या बहियों को भावी पीढी के लिए सुरक्षित रखना ।

8. वंशावलियों के विभिन्न आयामों का अध्ययन व अनुसंधान।

9. पारम्परिक वंशावलियों का संरक्षण संवर्द्धन।

10. वंश लेखकों के निवास स्थलों का भ्रमण करना।

11. राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों का आयोजन

12. कार्यशालाओं का आयोजन।

13 विशिष्ट व्याख्यानों का आयोजन।

14 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन।

15. पुस्तकालय की स्थापना व उसे शोध अनुसंधान के रूप में विकसित करना।

16. पाण्डुलिपियों का एक स्थान पर संग्रह व उनका डिजिटलाइजेशन।

17. वंशावलियों एवं परम्पराओं के विविध आयामों पर शोध एवं प्रकाशन।

18 वंशावलियों के वैज्ञानिक रूप से संरक्षण, उन्नत स्याही पर शोध इत्यादि सम्बंधित कार्यों हेतु प्रयोगशाला की स्थापना।

19 इस एतिहासिक धरोहर के प्रति जन जागृति पैदा करना व उसे व्यापकता देना।

20 अनुभवी भाट बड़वो द्वारा उनके परिवार के युवाओं को इस विद्या में निपुण बनाने के

लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना

21. भाट बड़ों को गोत्र अनुसार इतिहास लेखन हेतु प्रेरित करना

22. पारिवारिक इतिहास लेखन व वंश वृक्ष तैयार करने हेतु एक सॉफ्टवेयर बनाने का प्रयास करना।

संगठन

1. राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय कार्यकारिणी दवारा मनोनीत

2. सदस्य प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत वंशावली लेखन एवं प्रबंधन प्रकोष्ठ अध्यक्ष /संयोजक

3. सहवृत सदस्य इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों में से दो सदस्य ।